रमेश कुमार यादव
हिन्दी-विभाग डी.के.कालेज
डुमराँव बक्सर बिहार

'रीतिकाल बिहारीलाल'

नही पराग नहिं मधुर मधु, नहि विकास यहि काल।
अली कली ही सो बध्यों, आगे कौन हवाल॥

तंत्रीनाद कवित्त रस, सरस राग रतिरंग।
अनबूड़े बूड़े तिरे, जे बूड़े सब अंग॥

अंग-अंग नग जगमती, दीप शिखा सी देह।
दीया बुझाय हूँ रह्यो, बडे उजेरो गेह॥

रस सिगार मंजन किये, कंजन मंजन दैन।
अंजन रंजन हूँ बिना, खंजन गंजन नैन॥

अनियारे, दीरघ दृगनि किती न तरुनि समान।
वह चितवनि औरै कछु, जिहि बस होत सुजान॥

बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय।
सौंह करै भौहनि हँसै, दैन कहै नहि जाय॥

नासा मोरि नचाय दृग, करी कका की सौंह।
काँटे सी कसकै हिये, गड़ी कँटीली भौंह॥

इति आवत चलि जातउत, चली छ सातक हाथ।
चढ़ी हिंडोरे सी रहे, लगी उसासन हाथ ॥

आड़े दै आले बसन, जाड़े हूँ कि राति।
साहस कै कै नेह बस, सखी सबै ढिग जाति॥

दृग उरझत टूटत कुटुम जुरत चतुर चित प्रीति।
परति गाँठ दुरजन हिए, दई नई यह रीति ॥

सघन कुंज छाया सुखद, सीतल मंद समीर।
मन है जात अजौं वहै, वा यमुना के तीर ॥

कनक कनकते सौगुनी, मादकता अधिकाय।
वह खाए बौराए नर, यह पाए बौराय ॥

लरिका लैबे के मिसुन, लंगर मोग ढिग आइ।
गयो अचानक आँगुरी, छाती छैल छुवाइ ॥

कहत नटत रीझत खीझत मिलत खिलत लजियात।
भरे भौन में करत हैं नैननि ही सों बात ॥

मेरी भव बाधा हरौ राधा नागर सोइ।
जा तन की झाई परै स्याम हरित दुति होइ॥

अपने अंग को जानिकै, जोबन नृपति प्रवीन।
स्तन मन नैन नितंब को बड़ो इजाफा कीन॥

कागद पर लिखत न बनत, कहत संदेश लजात।
कहिहै सब तेरो हियो, मेरे हिय की बात॥

या अनुरागी चित्त की गति समुझै नहि कोय।
ज्यौं ज्यौं बूडै स्याम रंग त्यौं त्यौं उज्ज्वल होय॥

जौ बाकै तन की दशा देख्यो चाहत आप।
तौ बलि नैक बिलोकियत चलि औचक चुपचाप॥

सीस मुकुट कटि काछनी कर मुरली उर माल।
इहिं बानिक मो मन बसौ सदा बिहारी लाल॥

सोहत ओढ़े पीत पट स्याम सलोने गात।
मनौ नीलमनि-सैल पर आतप पर्‌यौ प्रभात॥

सबै सबै सुन्दर सबै रूप कुरूप न कोय।
मन की रुचि जेती जितै तित तेती रुचि होय॥

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, डी.के. कॉलेज,
डुमरॉव बक्सर, बिहार